POLITICAL SCIENCE Dep.
BA-2-(H), Paper-4

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur

राजनीतिक संस्कृति के परिवर्त्य

राजनीतिक संस्कृति के नियामकों के प्रभाव को कम - अधिक करने वाले तथ्यों को परिवर्त्य कहा जाता है। इनसे ही व्यक्ति अपने हितों, सहभागिता, या मूल्य अभिमुखीकरणों के निश्चय की स्थिति में आता है। इनमें तीन को आधारभूत माना जाता है। ये तीनों इस प्रकार हैं -

(1) ज्ञानात्मक अभिमुखीकरण :-

ज्ञानात्मक अभिमुखीकरण व्यक्ति को अपने व्यक्तिपरक हितों के माध्यम से राजनीतिक संस्कृति में भाग लेने के लिए तैयार करता है। व्यक्ति, राजनीतिक वस्तुओं, घटनाओं, क्रियाओं और विभिन्न राजनीतिक मुद्दों पर ज्ञान रखता है। यह ज्ञान सही और ग़लत भी हो सकता है। व्यक्ति अपने व्यक्तिपरक हितों को राजनीतिक व्यवस्था से पूरा होना या नहीं होना आंकता है। राजनीतिक संस्कृति के परिवर्त्य के रूप में व्यक्ति के ज्ञानात्मक अभिमुखीकरण का प्रमुख स्थान होता है। इसी से उसके राजनीतिक व्यवहार में नियमितता आती है।

(2) भावात्मक अभिमुखीकरण :-

भावात्मक अभिमुखीकरण से तात्पर्य व्यक्ति

Scanned with CamScanner

की उन भावनाओं से है जिसके कारण वह राजनीतिक गतिविधियों से लगाव या अलगाव, पसंद या नापसंद रखने लग जाता है। इसी आधार पर वह राजनीतिक प्रक्रियाओं में सहभागी बनता है या उनसे अलग-थलग रहता है। इससे राजनीति में उसकी अभिरुचि का निश्चय होता है। इसी से वह किसी व्यवस्था, संस्था या प्रक्रिया को स्वीकार या अस्वीकार करता है।

③ मूल्यांकनात्मक अभिमुखीकरण :-

इससे व्यक्ति राजनीति को समझता है एवं उसका मूल्यांकन करता है। राजनीतिक प्रश्नों, समस्याओं एवं मुद्दों पर निर्णय करते समय व्यक्ति मूल्यों के मानदंड प्रयुक्त करता है। व्यक्ति को हर राजनीतिक क्रिया को अर्थ प्रदान करना होता है। यह अर्थ मूल्यों के आधार पर होता है और यह मूल्य उसके हितों से निर्धारित हो सकते हैं। कई बार व्यक्ति राजनीतिक क्रिया को अर्थ प्रदान करते समय मूल्यों से अधिक अपने हितों को ध्यान में रखने लगता है। राजनीतिक व्यवहार का निश्चय व्यक्ति के मूल्यांकनात्मक अभिमुखीकरण से ही होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राजनीतिक संस्कृति कई तथ्यों द्वारा प्रभावित हो सकती है। इस कारण राजनीतिक संस्कृतियों में भिन्नता भी हो सकती है।

Dr. Seema Arya

Scanned with CamScanner